बुन्देलखण्ड की समस्याओं के समाधान की राह खोजने का प्रयास
23–24 नवम्बर को बॉदा मे संगोष्ठी संपन्न

सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड आज दो बड़ी समस्याओं से जूझ रहा है । एक ओर जंगलों और पहाड़ों का अंधाधुंध विनाश किया जा रहा है और दूसरी ओर यहॉ का श्रमिक और किसान आर्थिक तंगी तथा अनीतियों का शिकार होकर बड़े शहरों तथा दूसरे राज्यों की ओर पलायन कर रहा है। देश मे नगरीकरण एवं औद्योगीकरण के व्यापक प्रोत्साहन के कारण जंगल तथा पहाड़ काटे जा रहे हैं , कृषि की उर्वर भूमि पर कारखान और तापीय बिजलोघर बनाने का प्रयास चल रहा है। उससे उत्पन्न मौसम की बेतहासा गर्मी तथा बरसात की अनियमितता और अनिश्चितता यहॉ की कृषि को बुरी तरह प्रभावित कर रही है। खेती अनार्थिक हो रही है , इसका शिकार बडे एवं छोटे किसान तथा खेती मे लगे मजदूर हो रहे हैं। विगत तोन दशकों मे यहॉ के सैकड़ों किसानों ने आत्महत्या की है। स्थिति यह है कि गॉव वीरान हो रहे हैं और नगर कूड़े के ढेर बन रहे हैं। पूरी तथाकथित विकास की प्रकिया सभी को बीमार, व्यक्ति को निपट स्वार्थी तथा समाज को विघटित कर रही है। राजनैतिक तथा जातीय ध्रुवीकरण के कारण परिवार जैसा यहॉ का ग्रामीण समाज आज टूट कर बिखर रहा है। समाज हर क्षेत्र मे परमुखापेक्षी तथा परावलम्बी बनता जा रहा है।

उपरोक्त विषय एवं परिस्थितियों पर 23 एवं 24 नवम्बर के दौरान स्वनामधन्य हाल ही मे दिवंगत बहुमुखी किसान श्री कामराज सिंह के प्रति समर्पित करते हुये बॉदा के समीप बड़ोखर खुर्द गॉव मे संचालित हयूमेन एग्रेरियन सेण्टर परिसर मे आयोजित संगोष्ठी मे उत्तर प्रदेश –बुन्देलखण्ड की गणमान्य संस्थाओं के संचालक तथा प्रतिनिधि , समाज एवं पर्यावरण के हित मे कार्यरत पत्रकार, जैविक किसान , शिक्षक , जागरूक नागरिक तथा वर्तमान एवं पूर्व प्रशासक आदि लगभग 98 व्यक्तियों ने सकियता से भाग लिया। संगोष्ठी का संचालन सेण्टर के संचालक श्री प्रेम सिंह , समाजकर्मी श्री स्वतंत्र तिवारी, श्रीशैलेन्द्र सिंह बुन्देला, सौर–ऊर्जा विशेषज्ञ श्री रामप्रकाश सचान, डॉ. चन्द्रमौलि श्रीवास्तव, श्री शान सिंह , श्री हरिश्चन्द्र तथा श्रीमती शोभना श्रीवास्तव आदि के सहयोग से डॉ. भारतेन्दु प्रकाश ने किया।

डॉ. भारतेन्दु प्रकाश ने सर्वप्रथम चित्रकूटधाम मंडल के आयुक्त माननीय श्री मुरलीधर दुबे का शुभकामना संन्देश पढ़कर सुनाया और संगोष्ठी के आयोजन की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। प्रारम्भ करते हुये श्री प्रेम सिंह ने सभी सहभागियों का स्वागत किया तथा परिसर मे चल रहे कार्यों से सहभागियों को अवगत कराया। तत्पश्चात् जल संरक्षण तथा खेत पर अपने तालाब बनाने और जैविक खेती तथा गॉव के अपने बाजार आदि से किसानों की आमदनी तथा उनका मनोबल

बढ़ने के प्रत्यक्ष प्रयोग वरिष्ठ समाजकर्मी डॉ. अरविंद खरे तथा श्री पुष्पेन्द्र भाई ने प्रस्तुत किया। जैविक सब्जियों की खेती के टीकमगढ़ तथा महोबा मे किये सफल प्रयोगों को प्रस्तुत किया श्री भागवत प्रसाद तथा श्री रुद्र प्रताप मिश्र ने । कोंच जिला जालौन के श्री राधेकृष्ण ने महिला किसानों को संगठित करने ,कृषि कार्य एवं जल संरक्षण के साथ गॉवों के आत्मविश्वास को दृढ़ करने मे आक्सफैम के सहयोग से सहभागी विकास के क्षेत्र मे अपने सफल प्रयोगों का जिक्र किया। श्री अम्बरीष कुमार ने बॉदा मे किये जल संरक्षण के साथ किसानों की आमदनी बढ़ाने के अपने कार्य का प्रस्तुतीकरण किया। श्रो जगरूप सिंह ने बुन्देलखण्ड के गॉवों तथा किसानों के परावलम्बी बनने के पीछे निहित कारणों की समझ बढ़ाकर कारणों को दूर करने का आग्रह किया। श्री उमाशंकर पाण्डेय ने अतर्रा के धान आधारित उद्योंगों का पुनः जागृत करने पर बल दिया। उरई से पधारे डॉ. कुमारेन्द्र सिंह सेंगर ने अपने महत्वपूर्ण आलेख तथा संक्षिप्त उद्‌बोधन मे पर्यावरण संरक्षण तथा ग्रामीण विकास की प्रक्रिया को समर्थ बनाने की दिशा मे व्यावहारिक प्रयासों को कारगर बताया। श्री अभिमन्यु भाई ने नदी पुनर्जीवन तथा आदिवासी क्षेत्र मे विकास एवं संगठनात्मक प्रयासों का जिक्र किया।

संगोष्ठी मे उपस्थित वरिष्ठ पत्रकार श्री भगवान दास गुप्त, पूर्व प्राचार्य श्री बाबूलाल गुप्त , वरिष्ठ उद्योगी श्री रमेश सचदेव, बॉदा स्थित जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय के अर्थशास्त्री डॉ सतीश कुमार त्रिपाठी, राजीव गाधी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रामभरत सिंह तोमर, श्री जे.पी. यादव तथा एडवोकेट श्री रणवीर सिंह चौहान आदि ने संगोष्ठी मे चर्चा के दौरान अपने महत्वपूर्ण विचार रखे । श्री शैलेन्द्र सिंह बुन्देला ने अपने जैविक खाद निर्माण की दक्षता प्रस्तुत की तथा निकट भविष्य मे बॉदा मे किसानों के लिये एक प्रशिक्षण –सह– उत्पादन केन्द्र की स्थापना की अपनी योजना बताई । यूको बैंक बॉदा के प्रबंधक श्री स्वप्निल मिश्र ने अपने विचारों के साथ बैंक द्वारा किये जाने वाले किसान हित के कार्यों का जिक्र किया। एडवोकेट श्री रामगोपाल सिंह ने बंजर जमीन पर जल संरक्षण , बागबानी तथा वृक्षारोपण के अपने प्रयास की जानकारी दी।

बॉदा के बहुचर्चित प्रखर पत्रकार श्री आशीष सागर तथा श्री उमाशंकर सिंह ने अपने बहुमूल्य विचारों से सभी सहभागियों को अवगत कराया। इसके साथ ही संगोष्ठी के दरम्यान उनके स्वयं के प्रयासों से प्रकाशित नवीन पत्रिका **प्रवासनामा** के प्रवेशांक का विमोचन भी संपन्न हुआ।

संगोष्ठी के तृतीय सत्र का आरम्भ अतर्रा के श्री प्रमोद दीक्षित मलय द्वारा प्रस्तुत एक प्रेरणाप्रद गीत से हुआ। श्री प्रेमसिंह ने आवर्तनशील खेती की पृष्ठभूमि मे अपने सिद्धान्तों साथ किसानों की आत्मनिर्भरता की दिशा मे किये जा रहे सफल प्रयोगों से सभी को अवगत कराया।

कार्यक्रम के दौरान बॉदा के न्यायिक मज़िस्टेट श्री भूपेन्द्र शुक्ल की उपस्थिति उल्लेखनीय थी, श्री शुक्ल ने कानून के क्षेत्र मे कतिपय समुचित संशोधनों की आवश्यकता पर बल दिया जिनके बिना समाज का विकास तथा पर्यावरण का संरक्षण कष्टसाध्य बन जाता है। वरिष्ठ प्रशासक तथा बॉदा स्थित कृषि विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री देवीदास जी ने संगोष्ठी के सभी सत्रों मे उपस्थित रहकर अपने अनुभव तथा संकल्पनाओं से सहभागियों को अवगत कराया। संगोष्ठी के तृतीय सत्र के दौरान श्रीमती मनोरमा लाल ने लखनऊ मे किये जा रहे झुग्गी झोपड़ी के बच्चों के सामाजिक एवं शैक्षिक विकास संबंधी अपने कार्यों को प्रस्तुत कर नगरीय गरीबों की समस्याओं तथा चुनौतियों का जिक्र किया। समापन सत्र मे बॉदा के पूर्व जिलाधिकारी श्री डी, एन. लाल ने मुख्य अतिथि के रूप मे अपने जीवन के अनुभवों तथा अपने विचारों को विस्तार से प्रस्तुत किया ।

संगोष्ठी मे उपस्थित वरिष्ठ समाजकर्मियों, पर्यावरण एवं समाज के प्रति समर्पित बुद्धिजीवियों तथा कर्मठ कार्यकर्ताओं को आयोजकों की ओर से मुख्य अतिथि के करकमलों से विशेष सम्मानपत्र प्रदान किये गये। संगोष्ठी के समापन के पूर्व सभी सहभागियों का सहभागिता–पत्र से भी सम्मानित किया गया। अन्त मे श्री प्रेम सिंह ने उपस्थित सहभागियों का आभार व्यक्त किया तथा मुख्य अतिथि सहित सभी महानुभावों के आगमन तथा कार्यक्रम की सफलता हेतु उनकी शुभकामनाओं के लिये हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम मे प्रस्तुत अनुभव तथा आलेख आदि किसान विज्ञान केन्द्र–बुन्देलखण्ड द्वारा प्रकाशित **शस्य श्यामला** के आगामी अंको मे प्रकाशित किये जायेंगे।

प्रस्तुति : श्रीमती शोभना श्रीवास्तव एवं श्री हरिश्चन्द्र